गोबिंद-साहित्य का समाज-मनोवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ शोभा कौर

एसोसिएट, तृतीय स्तर २०१८

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

राष्ट्रपति निवास, शिमला

समाज-मनोविज्ञान नितांत आधुनिक अवधारणा है , किन्तु समाज और मन मनुष्य के विकास के साथ चलती दीर्घ परम्परा के रूप में विद्यमान है . भारतीय संस्कृति में समाज-संरचना तथा व्यक्ति-मन के विश्लेष्ण की समृद्ध परम्परा मौजूद है .हमारे शास्त्रों में जहाँ एक ओर मन ,चित ,बुद्धि ,अहंकार का सूक्ष्म चित्रण पराभौतिक विज्ञान के रूप में प्रचलित है ,वहीँ समाज के सुचारू संचालन के लिए समय समय पर विकसित विविध प्रणालियाँ भी विकसित हुई .यह सब ज्ञान नीति और धर्मदर्शन ग्रंथों जैसे योगदर्शन , स्पन्द्कारिका, विज्ञान-भैरव, अर्थशास्त्र में उपलब्ध है . इस शोध-पत्र में गुरु गोबिंद सिंह के साहित्य का समाज-मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जा रहा है.

गुरु गोबिंद सिंह भारतीय संस्कृति के ऐसे योद्धा-साहित्यकार हैं , जिन्होंने अपनी तलवार और कल के अद्भुत जौहर से भारतीय समाज की तकदीर बदल कर रख दी थी . 42 वर्ष की अल्पायु में गुरु गोबिंद सिंह जी ने 16 रचनाओं का सृजन किया जिन्हें 'श्री दसम ग्रन्थ ' के नाम से जाना जाता है . इसके अतिरिक्त उन्होंने अखिल भारतीय स्तर के विभिन्न विद्वानों , साहित्यकारों और कलाकारों को अपने दरबार में प्रश्रय दिया . इन रचनाकारों ने मौलिक साहित्य सृजन तो किया ही ,

साथ ही गुरु गोबिंद सिंह जी के आदेश पर सनातन भारतीय परम्परा के अनेक ग्रंथों का भी स्थानीय भाषा में अनुवाद किया . प्रश्न उठता है कि है क्या उद्देश्य हो सकता है इतने विपुल साहित्य सृजन का ?

- गोबिंद समय का साहित्यिक परिदृश्य कैसा था ?
- समाज-मनोविज्ञान क्या है और इसका क्या महत्त्व है ?
- गुरु जी ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के माध्यम से भारतीय मन और समाज को किस प्रकार परिवर्तित किया ?
- गुरु जी ने जटिल धर्म-व्यवस्था में किस प्रकार के बदलाव किये ?
- भारतीय सामाजिक-संरचना में गोबिंद साहित्य की क्या भूमिका है ?
- गुरु जी के समय आर्थिक परिदृश्य कैसा था और बहुत सीमित संसाधनों में उन्होंने अपनी राज्य-व्यवस्था और सैन्य संगठन कैसे संचालित किया ?
- राजनैतिक परिस्थियों का सामना उन्होंने कैसे किया और कौन से नये मानदंड स्थापित किये ?

समाज-मनोविज्ञान का अर्थ और परिचय :

समाज-मनोविज्ञान , मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत इस तथ्य का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की वास्तविक, काल्पनिक अथवा प्रच्छन्न उपस्थिति हमारे विचार , संवेग अथवा व्यवहार को कैसे प्रभावित करती है .

- व्यक्ति का व्यवहार सदा एक सा नहीं रहता .एक ही व्यक्ति कई रूपों में व्यवहार करता हुआ पाया जाता है . उसके विचार ,भाव तथा व्यवहार विविध परिस्थितियों में प्रभावित होते रहते हैं .
- समाज-मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन है .ऐतिहासिक रूप से इसके विकास में समाजशास्त्र और मनोविज्ञान दोनों का योगदान है .

समाज-मनोविज्ञान : परिभाषाएँ

1 रोबर्ट ए बायरन :

" समाज-मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति का व्यवहार और विचार के स्वरूप कारणों का अध्ययन करता है ."

2 मैक्डूगल :

"सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो समूहों के मानसिक जीवन का और व्यक्ति के विकास तथा क्रियाओं पर समूह के प्रभावों का वर्णन करता है और उसका विवरण प्रस्तुत करता है"

3 किम्बाल यंग :

" समाज-मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अंत:क्रियाओं का अध्ययन करता है और इस सन्दर्भ में कि इन अंत:क्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों , भावनाओं,संवेगों और आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है "

समाज-मनोविज्ञान का महत्त्व :

समाजमनोविज्ञान-, व्यक्तित्व के अलग अलग प्रकारों तथा व्यक्ति विशेष के व्यवहार को समझने में योगदान देता है .

व्यक्तित्व का विकास कैसे होअअच्छे सकारात्मक सोच कैसे आये , जीवन में आई निराशा तथा कुंठा कैसे दूर हो , इन सभी परिस्थितियों के जो कारण हैं, उन्हें समाजरा ही मनोविज्ञान द्वा- जाना जा सकता है और परिवर्तित किया जा सकता

- गुरु गोबिंद सिंह कृत ' श्री दसम ग्रन्थ 'हिंदी साहित्य का वह अनमोल खजाना है जो गुरुमुखी लिपि में होने के कारन लम्बे समय तक समुचित अध्ययन का विषय नहीं बन पाया.
- श्री दसम ग्रन्थ में निम्नलिखित 16 रचनाएँ संगृहित हैं 1 .जापु 2. अकाल स्तुति 3. विचित्र नाटक (आत्मकथा)4. चंडी चरित्र (प्रथम) 5. चंडी चरित्र (6.वार भगउती जी की (चंडी दी वार)7. ज्ञान प्रबोध 8. चौबीस अवतार 9. महंदी मीर 10.ब्रह्मावतार 11. रुद्रावतार 12. स्फुट 13. शस्त्रनाममाला 14.चरित्रोपाख्यान(405 चरित्र)15 जफरनामा16. हिकायतें

मनोविज्ञान और न्यूरो-लिंगविस्टिक प्रोग्राम

मन के मुख्यत: दो रूप हैं : 1 चेतन 2 अवचेतन

पंचेंद्रियों द्वारा मनुष्य जो भी सूचनाएं ग्रहण करता है ,उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया करता है . चेतन मस्तिष्क में यह प्रतिक्रिया स्पष्ट होती है परन्तु अवचेत मस्तिष्क इनमें बदलाव कर देता है.

अवचेतन मस्तिष्क पंचेंद्रियों द्वारा प्राप्त सूचनाओं में से

1. कुछ को नष्ट कर देता है

2 कुछ को परिवर्तित कर देता है

3 कुछ का समानीकरण कर देता है

अवचेतन मस्तिष्क में सभी प्रकार की सकारात्मक और नकारात्मक सूचनाएं दो प्रकार की मनोदशा में व्यक्त होती हैं

1 रिसोर्सफुल स्टेट और 2 अनरिसोर्सफुल स्टेट

गुरु गोबिंद सिंह एक मनोचिकित्सक की भांति भारतीय समाज की जड़ों में धंसी गुलामी की

अनरिसोर्सफुल स्टेट को रिसोर्सफुल स्टेट में लेन के लिए जो विधियाँ अपनाते हैं वे न्यूरो-लिंग्विस्टिक प्रोग्राम की ही पद्धतियां हैं.

गुरु गोबिंद सिंह जी स्नायु-तन्त्र की सूक्ष्म कार्य-प्रणाली को बेहतरीन ढंग से जानते थे कि कैसे कोई विचार 'न्यूरो पाथ वे' बनाता है और कैसे नई सोच से व्यक्ति की सम्पूर्ण कार्य-प्रणाली बदल सकती है .जब नाम-सिमरन से मस्तिष्क की तरंगें अल्फ़ा-स्टेट में पहुँच जाती हैं तो inner voice एक सकारात्मक सोच को जन्म देती है . जब हमारा REAL SELF जो कि परमात्मा का अंश है , उसकी आवाज बड़ी हो जाती तो दुनिया का कोई काम नामुमकिन नहीं रहता .

क्वांटम हीलिंग जिस बात को आज प्रमाणित कर रहा है उसे हमारे यहाँ औपेनिशदिक, वेदांत सूत्रों , कश्मीरी शैव दर्शन और आगम-ग्रंथों में बहुत पहले बता दिया गया था कि हम सब का आत्मतत्व एक उर्जा मात्र है और हम सब एक हैं , इसीलिए जब हम किसी के प्रति इर्ष्या,द्वेष , और नफरत के भाव रखते है तो हमारे सूक्ष्म सेल्स हमे ही नुकसान पहुचते है जिसे auto Immune disuses कहते हैं . इसीलिए गुरु जी ने जन-सामान्य के न्यूरो-पाथ वे में एक बात सुदृढ़ कर दी कि तुम में से एक-एक सवा-लाख के बराबर हो . वे कहते हैं :

एके नैन एके बैन

- चंडीचरित्र में गुरु जी की मौलिक- उद्भावना यह है कि उन्होंने किसान , बढाई , मोची , धोबी , नाई ,तेली , साबुन बनाने वाले , ईंट बनाने वाले – ऐसे कामगार व्यक्तिओं के कार्य से देवी के युद्ध-ज की नींव खे जाने वाले शौर्य की तुलना की है जिससे समा

ये सारे उदाहरण . व्यक्तिओं को एक नई पहचान मिली न्यूरोलॉजी के पांच नियमों sound , movie, color , I , and Unique को पूरा करते हैं .

इसीलिए आम इन्सान अपने आप को गुरु गोबिंद सिंह से एसोसिएट कर पाया ,उसमें इंटरेस्ट जागृत हुआ और और गुरूजी के मिशन को हृदय से अपना कर अपना तन-मन-धन न्योछावर कर सका

समाज-संरचना में बदलाव :

गुरूजी ने सदियों से जड़ जमाये बैठी हीन भावना को दूर किया .जिनकी जाति और कुल में कभी सम्मान नही आया , सरदारी नही आई उन्हें सिंह के समान इतना शक्तिशाली बनाया कि उनके सामने तुर्क और मुगलों के झुण्ड हाथियों की तरह भागने लगे .

जिन की जाति और कुल माहि

सरदारी नही भई कदाहीं

कीटन तै इनको मृगिंदु

करो हरन हित तुर्क गजिंदु

इनही को सरदार बनावों

तबै गोबिंद सिंह नाम सदावों

- 2 राजसी कर्म के लिए प्रेरित किया :

जिस काम के लिए मुगल शासकों ने भारतीयों को मनाही की , उसे ही गुरूजी ने आवश्यक बना दिया ...उन्होंने अपने सिखों को केश रखने ,पगड़ी बांधने , शस्त्र रखने, घोड़े पर चड़ने की आज्ञा दी

- 3 कर्म की प्रकृति को बदला :

युद्ध केवल क्षत्रिय कर्म माना जाता था . गुरूजी ने दलित जातियों के हाथ में शस्त्र-अस्त्र थमाए ; उन्हें युद्ध प्रशिक्षण दिया और सर्वश्रेष्ठ योद्धा तैयार किये .

- 4 नाम का मनोवैज्ञानिक असर(यथा नाम तथा गुण) :

भारतीय जनता में वीर भाव भरने के लिए , आम जनता में प्रचलित ---- खैराती , फकीरा , निकचू, रुलदू , मंगतू आदि नाम बदल कर उन्होंने अजित सिंह , रंजीतसिंह ,जुझार सिंह , शेर सिंह , फतेह सिंह आदि रखे . न केवल लोगों के नाम बल्कि परमात्मा के भी वैष्णव परम्परा वाले कोमल नाम – हरी , बनवारी , माधव , रणछोड़, रासबिहारी की जगह काल , महाकाल , सर्वकाल , रिपुदमन , चक्रपाणी , खड्गकेतु इत्यादि रख दिए

5 शस्त्रों को भगवन का दर्जा दिया :

काल तुही काली तुही, तू ही तेग अरु तीर .

तू ही निशानी जीत की , आज तू ही जग बीर

6 मृत्यु-भय से मुक्ति :

रोज रोज अपमानजनक मरने से एक ही बार युद्ध में स्वभिमान के मौत ज्यादा उचित है

जो तोऊ प्रेम खेलन का चाऊ 1 ,सिर धर गली मोरि आऊ.

इत मारग पैर धरीजे, सिर दीजै कानि न कीजै . (गुरु नानक देव)

2 पहिला मरण कबूल जीवन की छड़ आस

होऊ सबन की रेणुका तउ आऊ हमारे पास (गुरु अर्जन देव)

3 जब आऊ की अऔध निदान परे अत ही रण में तब जूझ परौं (कृष्णावतार)

धार्मिक और अध्यात्मिक बदलाव

अध्यात्म भारतीय संस्कृति की वह विशेषता है जो उसे विश्वगुरु का दर्जा दिलाने में सक्षम रही है . किन्तु मध्ययुग में यही भारतीयों की सबसे बड़ी कमजोरी बन चुकी थी . समाज से कटा हुआ अध्यात्म कुछ धूर्त और पाखंडी वर्ग के हाथों में पड़ कर आम जनता के शोषण का अस्त्र बन चुका था . गृहस्थ से पलायन करने वाले योगी पुनः गृहस्थों से ही भीक्षा मांग कर जीवित थे. दूसरी ओर धर्म के पोंगा पंडितों और कट्टर काज़ी मुल्लाओं ने सामान्य जन का जीवन नरक बना दिया था . ऐसी विषम परिस्थितियों में निर्गुण संतों और सिख गुरुओं ने गृहस्थ आश्रम का पालन करते हुए प्रभु के गुणगान का मार्ग दिखाया . गुरु गोबिंद सिंह जी ने भारतीय अध्यात्म के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान 'तत्त्वमसि' और

'अहमस्मि' को इस रूप में व्यक्त किया कि सच्चा नाम सिमरन मिलने से ही मनुष्य अपनी आत्मा से साक्षात्कार कर परमतत्व को प्राप्त कर सकता है :-

' गिआन गुरु आतम उपदेशहु नाम बिभूति लगाओ .'.....

'तब ही आतम तत को दरसे परमपुरख कह पावै.' (रामकली पातशाही १०)

राजनैतिक स्तर पर बदलाव :

सर्वप्रथम लोकतंत्र की स्थापना गुरु गोबिंद सिंह ने की . उन्होंने स्वीकृत पंचों को 'पंज प्यारों ' के रूप में राजसत्ता को लोकसत्ता में परिवर्तित कर दिया और जनता के शासन को जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को सौंप कर भारत के शताब्दियों के इतिहास का तख्ता पलट दिया .यह सामाजिक , राजनैतिक , आर्थिक , सांस्कृतिक ,दृष्टि से ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन था जिसके अन्य उदाहरण विश्व की बड़ी क्रांतियों में बाद में दिखाई पड़ते है .

इतिहासकार डॉ हरिराम गुप्ता के अनुसार :

"सिख कौम ने मुगल स्टेट के अंदर अपनी स्टेट कायम करके अपनी राजनैतिक उन्नति का मार्ग तैयार किया . गुरु हरगोबिन्द जी का मिरी-पीरी की दो तलवारें फन कर गद्दी पर बैठना

और अकाल-तख़्त का निर्माण करना मुग़ल बादशाह की शक्ति को खुली चुनौती था . उन्होंने अकाल-तख़्त की छत्रछाया के नीचे एक स्वयं चालित सत्ताधारी कौमान्तरी खालसा सल्तनत का ऐलान किया ."

आर्थिकस्तर पर बदलाव-

- गुरु गोबिंद सिंह जी ने जाति-पाती विहीन खालसा पंथ की सथापना की जो मुख्यतःसैन्य संगठन था . एक सैन्य संगठन के लिए अस्त्र शस्त्र, घोड़े , हाथी , भंडार-गृह, सैन्य प्रशिक्षण , भोजन आदि की व्यवस्था की .

  गुरु जी ने अखिल भारतीय स्तर के श्रेष्ठ साहित्यकारों और कलाकारों को अपने दरबार में प्रश्रय दिया था . इस संरक्षण में धन की पर्याप्त व्यवस्था होती थी .

  भारतीय समाज में सिख गुरुओं का आर्थिक चिन्तन और योगदान निम्नलिखित रहा :

- वर्गहीन समाज की स्थापना
- व्यक्तियों को पूर्ण बनाना
- सामुदायिक जीवन : भजन , भोजन ,युद्ध

- 1 ज्ञान प्रबोध एवं ब्रह्मावतार नामक रचनाओं में स्वर्णदान , राजत दान , ताम्रदान, अन्न दान , वस्त्र दान , भूमिदान का उल्लेख मिलता है.

- 2 राजसूय यज्ञ , अश्वमेघ यज्ञ , गजमेघ यज्ञ आदि के वर्ण

न में राजाओं के दान पुन्य एवं प्रजा की सुख समृद्धि का वर्णन है .

3 चंडी चरित्र उक्ति विलास और चंडी चरित्र द्वितीय में गुरु जी ने रोज़गार व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र से संबंधित व्यक्तियों और उनकी कार्य कुशलता से सीख लेने का जिक्र किया है जैसे लकडहारा , दर्जी , धोबी , लुहार , तेली , रंगरेज , मुंगेरी , ईंट बनाने वाला , किसान , बढई, माली , साबुन बनाने वलवल , मजदूर , विश्वकर्मा , दलाल व्यापारी ,वैद्य, ठठेरा , वणिक इत्यादि

साहित्यिकस्तर पर बदलाव-

- गुरु जी भारतीय राष्ट्र में भाषा के वर्चस्व को समाप्त कर संस्कृत के सभी श्रेष्ठ ग्रन्थों का जनमानस की भाषा में अनुवाद किया और अखिल भारतीय स्तर के विद्वानों को अपने दरबार में प्रश्रय दे कर उनसे भी यही कार्य करवाया .

- गुरु गोबिंद सिंह के समकालीन रीति कवि राज दरबारों में पैसों और यश की खातिर अपने आश्रयदाताओं की अतिश्योक्तिपूर्ण प्रशंसा में लगे थे रीतिकाल के अधिकांश प्रमुख कवी चिंतामणि., बिहारी ,मतिराम , कुलपतिमिश्र, और देव औरंगजेब के समकालीन थे किन्तु किसी ने भी औरंगजेब की नीतियों , हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचार और सम्पूर्ण देश में हो रही उथल –पुथल का रंचमात्र भी उल्लेख नहीं किया , जबकि गुरु जी दो महत्वपूर्ण रचनाओं विचित्र नाटक और जफरनामा में न केवल गुरु जी के : जीवन से प्रत्यक्ष जुडी घटनाओं का उल्लेख है, अपितु ये समसामयिक राजनैतिक , ऐतिहासिक घटनाओं का जीवंत दस्तावेज है

सांस्कृतिक स्तर पर बदलाव-

- अतीत में सब कुछ स्वर्णिम और ग्राहिय नहीं होता , परिवर्तन और निरन्तरता ही किसी संस्कृति को जीवंत बनाये रखने में सक्षम होते हैं . गुरु जी ने अपने मन्तव्य की पूर्ति हेतु भारतीय वैदिक ओपनिशदिक , पौराणिक और ऐतिहासिक ज्ञानको युगीन मांग के अनुरूप प्रस्तुत किया . उन्होंने अपने साहित्य में भारत की श्रेष्ट उपलब्धियों के विषय में बताया की भारत खेती और सिंचाई की सबसे प्राचीन भूमि है . सुजलाम सुफलाम इस धरती पर हजारों वर्ष पहले अनेक प्रकार के धनधान्य की खेती होती थी .विचित्र नाटक रचना में लव कुश के वंशजों का उल्लेख करते हुए वे उस

स्वर्णिम अत्तित की बात करते हैं . सभ्यता के इतिहास में ऋतुओं के ज्ञान के साथ खेती का ज्ञान सिद्ध करने में भेर्तिये सबसे पहले थे . लोकशाही की जन्मभूमि भी भारत ही है .

अन्तरिक्ष विद्या का ज्ञान सबसे पहले भारत में हुआ था जिस समय विश्व के कई देहस अज्ञान की नीद में सोये थे तब भरतीय नक्षत्र ओं को नाप रहे थे . चौबीस अवतार नामक रचना में गुरु जी इस पृथ्वी पर मानव के विकास की वैज्ञानिक अवस्थाओं का परिचय देते हैं . अंकशास्त्र और गणित का उद्भव भी भारत में हुआ था .विश्व के इतिहास में रामायण और महाभारत सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ हैं . गुरु जी ने इन रचनाओं का पुनर्लेखन अपने योधा जोश को जगाने के लिए किया . भारतीय आयुर्वेद विश्व का सबसे प्राचीन आरोग्य विज्ञानं है . महर्षि चरक विश्व के पहले फिजिशियन हैं और महर्षि सुश्रुत विशव के पहले प्लास्टिक सर्जन है , इन सब का उल्लेख गोबिंद साहित्य का सबसे सुदृढ़ पक्ष है. चरित्रोपख्यान्न में इसका जिक्र विस्तार से मिलता है

गोबिंद-साहित्य का क्षैतिज(horizontal) और रेखकीय(vertical) प्रभाव

क्षैतिज(horizontal)प्रभाव :

सेनापति और गुरु दरबार के कवियों ने गुरु जी के ग्रन्थ से प्रभावित होकर अनेक रचनाये की ....जिनकी गणना श्रेष्ठ वीर-काव्य में की जाती है

रेखकीय(vertical) प्रभाव:

श्री दसम ग्रन्थ न केवल सिख-समुदाय के लिए अपितु समस्त भारतीय संस्कृति का क्लासिक ग्रन्थ है . इसी ग्रन्थ की प्रेरणा लेकर सिख-समाज ने आने वाले वर्षों में भारत के इतिहास में अद्भुत कारनामे कर दिखाए .

- सन १७४७ से १७६४ के बीच अहमद शाह अब्दाली और नादिरशाह के आक्रमणों का सिखों ने सीधा सामना किया , और भारत की बहू-बेटियों की इज्जत की रक्षा की ....इसी समय सिखों के १२ बजने का मुहावरा प्रसिद्ध हुआ , जो आज दुर्भाग्य और नासमझी से एक चुटकुला बन गया है .
- औपनिवेशिक काल में जब से अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा-पद्धति से धर्म और अध्यात्म को अलग कर दिया तब से समाज में मूल्यहीनता की स्थिति उत्पन्न हो गई है . अग्रेजों ने सिखों की ताकत का स्त्रोत जब पता लगाया तो उन्हें श्री दसम ग्रन्थ के बारे में पता चला , और उन्होंने इसके खिलाफ सिखों के मन में शंका के विष-बीज बो दिए.

निष्कर्ष

- प्रश्न उठता है कि गोबिंद –साहित्य के समाज-मनोवैज्ञानिक अध्ययन का वर्तमान समय में क्या महत्त्व है ?
- यह समझना होगा कि उत्तर-औपेनिवेशिक समय में जिस प्रकार हम फिर से धर्म, जाती-पाति ,अन्धविश्वास , मूल्य-हीनता के गर्त में फंस गए हैं क्या गोबिंद साहित्य हमे सही रास्ता दिखा पता है ?
- हम तकनीकी उन्नति कर रहे हैं , पर किस कीमत पर ?
- क्या हम फिर से शारीरिक , मानसिक, वैचारिक गुलामी में धंस रहे है तो गोबिंद-साहित्य का पुनर्मूल्यांकन अनिवार्य है ....
- क्योंकि हमे इस तकनीकी उन्नति की अंधी-दौड़ में क्षणभर रुक कर सोचना होगा कि गुरु जी ने अपने समय की कठिन परिस्थितियों में अपने समाज और जनता की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक समाधान किया क्या आज हमें फिर से उन्हीं तकनीकों को अपनाने की जरूरत नही है ?

सन्दर्भ सूत्र

१ श्री दसम ग्रन्थ : गुरु गोबिंद सिंह , सम्पादक : डॉ जोधसिंह

२ गुरु गोबिंद सिंह जी की नैतिक मान्यताएं : डॉ हुकुमचंद राजपाल

3 सिख-राज का संकल्प : डॉ जसपाल सिंह

४ सिख-गुरुओं का आर्थिक-चिन्तन : जयरामदास

५ सिख-गुरुओं का शैक्षणिक योगदान : डॉ अमृतकौर रैना

६ संस्कृति-नियंता :गुरु गोबिंद सिंह : सम्पादक -डॉ शोभा कौर

७ गुरु गोबिंद सिंह कृत रुद्रावतार : एक अध्ययन : डॉ शोभा कौर

८ भारतीय समाज और सिख गुरु : सम्पादक- डॉ शोभा कौर

९ समाज-भाषाविज्ञान : डॉ रविन्द्र श्रीवास्तव

१० समाज-मनोविज्ञान : डॉ अनिल कुमार

११ न्यूरो लिंगविस्टिक प्रोग्राम : रिचर्डस एंड बिंडलर